पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.02.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

चलो चलो चलो

23 मार्च शहीद दिवस पर

जन्तर मन्तर, नई दिल्ली

"राष्ट्र रक्षा यज्ञ"

प्रात: 11 से 1 बजे तक

साथियों सहित पंहुचे

–अनिल आर्य,संयोजक

वर्ष-33 अंक-17 फाल्गुन-2073 दयानन्दाब्द 193 16 फरवरी से 28 फरवरी 2017 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.02.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्यों के संघर्ष और बलिदान की गौरव भूमि हैदराबाद में आर्यों का भव्य समागम

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधाान में ''राष्ट्रीय आर्य बुद्विजीवी सम्मेलन'' सम्पन्न

तीनों धड़ों के नेताओं ने एकता का लिया संकल्प : दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिये

सभा को सम्बोधित करते परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डा.अनिल आर्य। मंच पर विमोचन करते बांये से सार्वदेशिक सभा के महामंत्री व संयोजक प्रो. विठ्ठलराव आर्य,स्वामी आर्यवेश जी(प्रधान,सार्वदेशिक सभा नं.1), श्री मिठाईलालसिंह (प्रधान,सार्वदेशिक सभा नं.2), श्री सुरेश अग्रवाल (प्रधान,सार्वदेशिक सभा नं.3), श्री किरणजीतसिंह सिंधु,स्वामी अग्निवेश (पूर्व प्रधान,सार्वदेशिक सभा), स्वामी प्रणवानन्द जी (गुरूकुल गौतम नगर), स्वामी धर्मानन्द जी (गुरूकुल आमसेना उड़ीसा) व श्री प्रकाश आर्य (महामंत्री सार्वदेशिक सभा नं.3)–एक सुखद अनुभूति।

शनिवार, 4 फरवरी 2017,सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 2,3,4 फरवरी 2017 को वैदिक आश्रम कन्या गुरूकुल,कुन्दन बाग,बेगमपेट,हैदराबाद (तेलगाना) में राष्ट्रीय आर्य बुद्विजीवी सम्मेलन का भव्य आयोजन स्वामी आर्यवेश जी के कुशल नेतृत्व में किया गया। सारी सुन्दर व्यवस्था प्रो.विठ्ठलराव आर्य अपनी टीम के साथ कर रहे थे। स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने के लिये आर्य समाज में एकता आवश्यक है। श्री सुरेश अग्रवाल ने कहा कि बहुत शीघ्र आर्य समाज व सार्वदेशिक सभा में एकता हो इसका पूरा प्रयत्न हो रहा है। श्री मिठाईलालसिंह ने कहा कि मैं एकता का प्रबल सर्मथक हूँ। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि ज्वलन्त मुद्दों को लेकर आर्य समाज को आन्दोलन करना चाहिये। श्री विनय आर्य ने कहा कि हैदराबाद पहली बार आकर अच्छा लगा,कई गुरूकुलों व संस्थाओं को देखने का अवसर मिला । डा.अनिल आर्य ने कहा कि बिना युवा शक्ति के हर बात बेमानी है सबसे पहले युवा संगठन मजबूत बनायें फिर आन्दोलन की बात करें।

यज्ञ के ब्रह्मा डा.सोमदेव शास्त्री ने कुशलता पूर्वक यज्ञ करवाया। स्वामी प्रणवानन्द जी के सार गर्भित प्रवचन हुए। प्रमुख रूप से ठाकुर विक्रम सिंह, श्री मायाप्रकाश त्यागी,श्री देवेन्द्रपाल वर्मा,डा.धीरजसिंह,स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, श्री आनन्दप्रकाश आर्य (हापुड़), श्री रमाकांत सारस्वत(आगरा), श्री रामसिंह आर्य (जोधपुर), स्वामी सच्चिदानंद जी (यमुना नगर), स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल), स्वामी रामवेश जी (जीन्द), स्वामी विश्वानन्द जी(मथुरा),श्री गोबिन्दसिंह भण्डारी(बागेश्वर),श्री सत्यव्रत सामवेदी (जयपुर), श्री यशपाल यश, डा. महावीर मीमांसक, डा. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ,आचार्य अमरदेव शास्त्री, डा. नरेन्द्र वेदालंकार, डा.जयेन्द्र आचार्य, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, सुदेश आर्या, कविता आर्या, अशोक आर्य (उदयपुर), बृजपाल कर्मठ, महेन्द्र भाई, रामकुमार आर्य, अरूण आर्य, प्रवीन आर्या, विवेक अग्निहोत्री, आस्था आर्या, रघुराम जू(एडवोकेट), ब्र.दीक्षेन्द्र, चौ. हरिसिंह सैनी, डा. वेदप्रताप वैदिक, अरूण अबरोल (मुम्बई), सोमदत शास्त्री (चण्डीगढ़), आर्येन्द्र कुमार (उड़ीसा), नरेन्द्र शास्त्री, धर्मधर आर्य (मुम्बई), आनन्द कुमार (कोलकोता), खुशहालचन्द आर्य, डा.आनन्द (आई.पी.एस.), आचार्या पवित्रा विद्यालंकार,बहन पूनम–प्रवेश,विजय आर्य आदि अनेको प्रबुद्व आर्य जन सम्मिलित हुए। आवास एवम् दक्षिण भारतीय भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। एक नई आशा के साथ लोग विदा हुए।

हिन्दूओं के संगठित होने से ही भारत की अखण्डता सुरक्षित - डा.अनिल आर्य

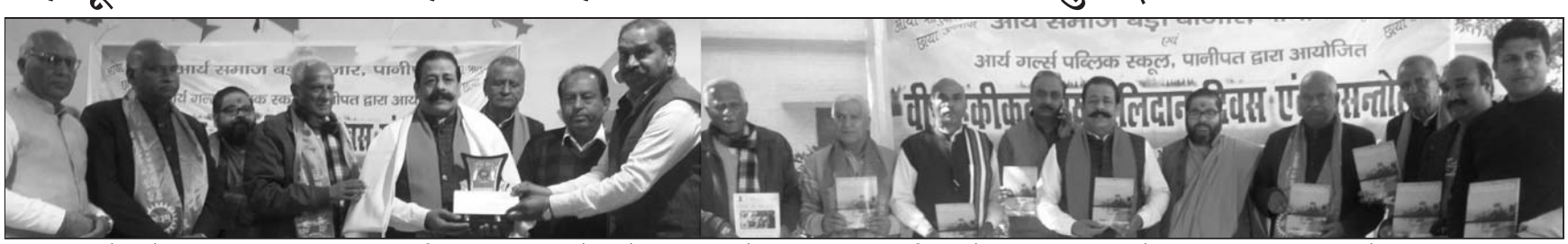

समारोह के मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य का स्वागत करते राकेश मितल,वीरेन्द्र सिंगला,आचार्य प्राज्ञदेव विद्याभास्कर,मनोहरलाल चावला,स्वामी ओम आनन्द जी, प्रि.रजनी शर्मा,प्रबन्धक अजय गर्ग, हरिचन्द स्नेही आदि।

बुधवार,1 फरवरी 2017,आर्य समाज,बड़ा बाजार,पानीपत (हरियाणा) के तत्वावधान में आर्य गर्ल्ज पब्लिक स्कूल,पानीपत में बंसत पंचमी पर्व व वीर हकीकतराय बलिदान दिवस सोल्लास मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य ने कहा कि ''काट सकते हो तो बाहर का हकीकत काटो,काटती असल हकीकत को यह तलवार नहीं'' यह उद्घोष अपने जीवन में चरितार्थ किया वीर हकीकत ने पर हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। देश की युवा शक्ति को यह बात जीवन में धारण करनी चाहिये । याद करो महाशय राजपाल की हत्या क्यों हुई,पं.लेखराम को छूरा किसने मारा ओर स्वामी श्रद्धानन्द को किसने गोली मारी – यह विचारणीय है। आओ वीर हकीकत के बलिदान से प्रेरणा लेकर पूरे हिन्दू समाज को संगठित करने का संकल्प लें।

शिवरात्रि को ऋषि दयानन्द को हुए बोध से देश व विश्व का अपूर्व कल्याण हुआ

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वेदों के अपूर्व ऋषि और आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वती को मंगलवार 12 फरवरी, सन् 1839 को शिवरात्रि के दिन बोध हुआ था। क्या बोध हुआ था, यह कि उनके पिता व परिवार जन जिस शिव मूर्ति के रूप में शिव लिंग की पूजा करते थे वह सच्चा व यथार्थ ईश्वर नहीं है। शिव पुराण ग्रन्थ में वर्णित भगवान शिव की जिस कथा को शिवरात्रि के दिन व्रत करते हुए सुना व सुनाया जाता है, वह कथा भी मन्दिर वाले शिवलिंग पर यथार्थ रूप में घटित नहीं होती। शिवरात्रि के दिन हम जिस कथा का वाचन करते हैं व सुनते हैं वह कथा कुछ ऐतिहासिक और कुछ पारमार्थिक होती है। कथा में भगवान शिव के जिन गुणों का वर्णन किया जाता है वह शिव मूर्ति वा शिवलिंग में किंचित भी नहीं पाये जाते। यदि यह कथा व शिव लिंग की मूर्ति सत्य होते तो फिर शिवरात्रि के दिन 14 वर्षीय बालक मूल शंकर को मन्दिर के चूहों को शिव मूर्ति के अंगों पर अबाध रूप से उछल कूद करते देख कर उसकी परम्परागत उपासना से निवृत्ति, विरक्ति व अनासक्ति न हुई होती। उन्होंने देखा कि देर रात्रि के समय मन्दिर में विद्यमान बिलों से चूहे निकलते हैं ओर शिव लिंग के चारों ओर दौड़ रहे हैं। शिव भक्तों व व्रतियों ने वहां जो मिष्ठान्नरूपी नैवैद्य चढ़ाये थे, उसका स्वतन्त्रतापूर्वक भक्षण कर रहे हैं। जीवित मनुष्य के शरीर पर यदि मक्खी भी बैठ जाये तो वह उसे उड़ा देता है मच्छर बैठे तो उसे हटाता व मार देता है। मक्खी व मच्छर भी तुच्छ जीव होकर मनुष्य से डरते हैं परन्तु चूहें शिवजी से पूरी तरह से निर्भय होकर उसके शरीर पर उछल कूद किये ही जा रहे थे। शिवमूर्ति का यह जड़वत् व्यवहार देखकर बालक मूलशंकर को यह निश्चय हो गया कि उनके सम्मुख जो शिवमूर्ति है वह शक्ति, बुद्धि व ज्ञान से सर्वथा रहित है। उन्होंने उसी दिन अपने पिता से जो कथा सुनी थी उसके अनुसार शिव कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं जो सर्वशक्तिमान है और विश्व के बड़े से बड़े बलशाली व्यक्ति को संकल्प व संकेत मात्र से धराशायी कर सकते थे। शिवलिंग की मूर्ति में वह शक्ति दृष्टिगोचर वा विद्यमान न होने अथवा चूहों को अपने शिर आदि अंगों से दूर न रख पाने के कारण बालक मूल शंकर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह असली शिव नहीं है, अतः उन्होंने न केवल अपने व्रत का ही त्याग कर दिया था अपितु भविष्य में शिवलिंग वा शिवमूर्ति की पूजा–अर्चना न करने का संकल्प भी कर लिया था। यही ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि के उस दिन बोध हुआ था। इसके बाद वह सच्चे शिव की खोज में जुट गये जिसे उन्होंने भारी तप व पुरुषार्थ करके प्राप्त कर ही लिया। यही ऋषि के बोध का फल था जिससे न केवल भारत अपितु सारा विश्व लाभान्वित हुआ। यह बात और है सारा संसार अविद्या से ग्रस्त है। संसार के लोगों ने अपनी अविद्या व किन्हीं स्वार्थों के कारण ऋषि दयानन्द के द्वारा अन्वेषित सच्चे शिव के सत्य स्वरूप विषयक ज्ञान की उपेक्षा की और आज भी संसार अविद्या से ग्रस्त होकर मत–मतान्तरों के अन्धविश्वासों को मानने में ही अग्रसर है।

ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि के दिन जो बोध हुआ उसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें संसार के प्रति वैराग्य हो गया और वह सच्चे ईश्वर को जानने के लिए एक अपूर्व सच्चे जिज्ञासु बन गये। शिवरात्रि पर बोध होने के समय उनकी आयु मात्र 14 वर्ष थी, इसलिये उन्होंने स्वयं को अध्ययन में व्यस्त किया और यजुर्वेद को स्मरण करने के साथ अनेक व्याकरण व शास्त्रीय ग्रन्थ पढते रहे। यदा–कदा वह अपने गुरुजन और मित्रों से भी ईश्वर के विषय में शंकायें करते रहते थे। ऋषि दयानन्द के वैराग्य विषयक विचार माता–पिता से छिप नहीं सके, अतः उनके द्वारा उनके विवाह की तैयारी की गई। जब बाल मूलशंकर को लगा कि वह विवाह से बच नहीं सकते तो गृहस्थ में न फंसने का निश्चय कर 18 वर्ष की आयु में उन्होंने पितृ गृह का त्याग कर दिया। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रथम उन्होंने देश भर के धार्मिक स्थानों में जाकर योगियों व धर्म गुरुओं से सम्पर्क कर उनसे ईश्वर व धर्म विषयक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया। एक सच्चा व सिद्ध योगी बनने और सद्ज्ञान की प्राप्त करने के लिए उन्होंने उत्तराखण्ड के अनेक पर्वत व वनों में स्थित धार्मिक स्थानों पर जाकर योगियों की खोज की। वहां उन्हें यदि कोई विद्वान मिला तो उससे वार्तालाप कर विद्या प्राप्त करने का प्रयत्न किया। इसी क्रम में उन्हें अपने एक् योग गुरु से मथुरा के संस्कृत व्याकरण के आचार्य व व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी का पता मिला। सन् 1860 में स्वामी दयानन्द ने मथुरा में गुरुचरणों में पहुंच कर उनसे विद्यादान देने की प्रार्थना की। इसके बाद लगभग तीन वर्ष उनके सान्निध्य में रहकर अष्टाध्यायी–महाभाष्य एवं निरुक्त आदि व्याकरण ग्रन्थों सहित अनेक ग्रन्थों व शास्त्रों का अध्ययन करते हुए उन पर अधिकार कर लिया। उन्होंने अपनी योग्यता को इतना बढ़ाया कि वह धाराप्रवाह सरल संस्कृत में भाषण करने में समर्थ होने के साथ किसी भी शास्त्रीय विषय पर प्रभावशाली उपदेश कर सकते थे। सन् 1863 में गुरु विरजानन्द सरस्वती जी से दीक्षा लेकर उनके परामर्श के अनुसार उन्होंने संसार से अविद्या दूर करने का निश्चय किया और इस कार्य को सफल करने में प्राणपण से समर्पित हो गये। 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन जिस बोध व ज्ञान का प्रकाश स्वामी दयानन्द जी की आत्मा में हुआ था वह कालान्तर में पल्लवित, पुष्पित व विकसित होकर विस्तार के शिखर पर पहुंचा जहां उन्हें संसार विषयक सभी प्रकार के सद्ज्ञान की प्राप्ति हुई। मनुष्य को जीवन में जितनी भी शंकायें हो सकती हैं, उन सबका समाधान ऋषि दयानन्द को प्राप्त हुआ। वह न केवल समस्त शास्त्रों के ज्ञान से आलोकित हुए अपितु ईश्वरीय ज्ञान वेदों को भी सम्पूर्णता के साथ उन्होंने आत्मसात किया और उसका प्रकाश दिग्दिगन्त व विश्व भर में फैलाया। उन्होंने घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण संसार के सभी मानवरचित ग्रन्थ तुच्छ व एकांगी हैं। कोई भी मानव निर्मित ग्रन्थ वेदों से समानता नहीं रख सकता। सभी ग्रन्थों की वही मान्यतायें स्वीकार व आचरणीय हो सकती हैं जो वेदानुकूल हों। वेदविरुद्ध मान्यताओं का प्रमाण नहीं होता। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जाना और समाधि अवस्था में उसका साक्षात् किया। हम विचार कर यह भी अनुमान करते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द को ईश्वर का साक्षात्कार न होता तो वह वेद प्रचार का कार्य कदापि आरम्भ न करते। उन्होंने एक स्थान पर कहा भी है कि जीवन में उन्हें जो प्राप्त करना था वह प्राप्त हो चुका था। उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्जन इस लिए नहीं किया क्योंकि उनकी विद्या प्राप्ति की इच्छा तब अधूरी थी जो गुरु विरजानन्द जी के सान्निध्य में रहकर पूरी हुई। उन्होंने संसार का कल्याण करने के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना सहित कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनके समय में न वेद उपलब्ध थे और न सत्य वेदार्थ। उन्होंने पुरुषार्थ कर वेद मन्त्र संहिताओं को प्राप्त करने सहित उनके सत्य वेदार्थ को जाना व उसका भाष्य कर सबके लाभार्थ प्रकाशन किया। उनका वेदप्रचार कार्य, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष आदि मिथ्या विश्वासों का खण्डन आदि संसार के सभी मनुष्यों के हित के लिए था। वह अंहिसा के पुजारी होने के साथ वैदिक व वैदिक शास्त्रों में वर्णित अहिंसा के समर्थक थे। उनकी अहिंसा दुष्टाचार का दमन और सदाचार को सम्मानित करने वाली थी। उनका मानना था कि एक दुष्ट व्यक्ति को दण्डित करने से उसके द्वारा भविष्य में पीड़ित किये जाने वाले अनेकानेक व्यक्तियों को अन्याय व अत्याचार से बचाया जा सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, चाणक्य व सभी वैदिक ऋषियों के वह प्रशंसक थे। उन्होंने संसार से अविद्या व अज्ञान का नाश करने के लिए वेदों की शिक्षा व गुरुकुल प्रणाली को प्रवृत्त करने का सत्यार्थप्रकाश में समर्थन किया। वह देश की आजादी के भी मन्त्रदाता व उद्घोषक थे। सत्यार्थप्रकाश एवं आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में उनके स्वराज्य विषयक विचारों को देखा जा सकता है। मांसाहार व पशुहत्या के वह घोर विरोधी थे और ऐसा करना उनकी दृष्टि में अमानवीय होने से निन्दनीय था। गोरक्षा के समर्थन व गोहत्या के विरोध में उन्होंने पृथक से 'गोकरुणानिधि' नाम से एक प्रेरक पुस्तक लिखी है। हिन्दी की उन्नति के लिए भी उन्होंने सबसे अधिक सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किया। विधवाओं की स्थिति सुधारने के लिए उन्होंने बाल विवाह जैसी कुप्रथा का निषेध किया। समाज में विधवा विवाह का प्रचलन भी आर्यसमाज के अनुयायियों के द्वारा ही हुआ। स्वामी जी ने शिवरात्रि को हुए बोध व उसके बाद विद्या प्राप्ति के उनके प्रयत्नों में मिली सफलता के कारण अस्पर्शयता व छुआछूत का उन्होंने विरोध किया और दलितों की शिक्षा व समानता के अधिकारों का समर्थन किया। उन्होंने कहा है कि विद्या व ज्ञान से सर्वथा शून्य मनुष्य की संज्ञा ही शूद्र है जिसे द्विजों व विप्रों के यहां भोजन पकाने आदि का कार्य करने के विधान का उन्होंने समर्थन किया है। हमारे मित्रों ने बताया है कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह स्वामी दयानन्द के कट्टर अनुयायी थे। वह किसी दलित बन्धु को ही अपना रसोइयां रखते थे। दलितोद्धार के क्षेत्र में भी ऋषि दयानन्द के अनुयायियों ने उनकी प्रेरणा के अनुरूप उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्हीं से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज ने गुरुकुल व दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूलों की स्थापना कर देश से अज्ञान दूर करने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में विज्ञान को भी उचित महत्व दिया। यदि वह कुछ दिन और जीवित रहते तो देश में विज्ञान पर आधारित उद्योगों की स्थापना में भी अग्रणीय भूमिका निभाते। स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने शुद्धि का समर्थन व प्रचार किया और स्वयं देहरादून में मोहम्मद उमर नाम के एक व्यक्ति व उसके परिवार को शुद्ध कर वैदिक धर्मी बनाया था। देश और विश्व कल्याण के इन सब कार्यों का श्रेय स्वामी दयानन्द को 12 फरवरी, 1839 की शिवरात्रि को हुए बोध का परिणाम कह सकते हैं। इस बोध का ही परिणाम है कि देश अज्ञान से काफी कुछ दूर होकर ज्ञान की ओर अग्रसर हुआ है। अभी धर्म के क्षेत्र में वेदों को उसकी महत्ता व गरिमा के अनुरूप उचित प्रतिष्ठा मिलना बाकी है। ऋषि दयानन्द की यदि अचानक मृत्यु न होती तो वह इस कार्य को पूरा करने का हर सम्भव प्रयत्न करते। इसी काम को करते हुए उन्होंने अपना बलिदान देकर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है। ऋषि को शिवरात्रि के दिन जो बोध हुआ था, उस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। लेख की सीमा को ध्यान में रखकर हम इसे विराम देते हैं। आगामी ऋषि बोध दिवस पर हम उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

हैदराबाद के विधायक टाईगर राजासिंह व कोटा के शिवनारायण उपाध्याय का अभिनन्दन

हिन्दुत्व के प्रहरी, हैदराबाद के विधायक श्री टी. राजासिंह का केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने उनके निवास पर अभिनन्दन किया। चित्र में–श्री टी.राजासिंह का शाल, स्वामी दयानन्द का चित्र भेंट कर अभिनन्दन करते परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य,महामंत्री महेन्द्र भाई,रामकुमार आर्य, अरूण आर्य, गोबिन्दसिंह भण्डारी, विवेक अग्निहोत्री। द्वितीय चित्र–कोटा (राजस्थान) से पधारे आर्य नेता श्री शिवनारायण उपाध्याय का अभिनन्दन करते प्रवीन आर्या,डा.अनिल आर्य,महेन्द्र भाई।

बिहार के कामता प्रसाद आर्य की टीम का स्वागत व देश के कौन कौन से पधारे आर्य जन

बिहार से अपनी टीम के साथ पधारे श्री कामताप्रसाद आर्य का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,महेन्द्र भाई व रामकुमार आर्य व सामने पण्डाल का सुन्दर द्रश्य।

पूर्व राजदूत श्री विद्यासागर वर्मा व आचार्य वीरेन्द्र विक्रम का स्वागत

शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विद्यासागर वर्मा–सुधा वर्मा का अभिनन्दन करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, ओम सपरा(प्रधान ,उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल),रामकुमार आर्य,डा.अनिल आर्य। द्वितीय चित्र–युवा विद्वान आचार्य वीरेन्द्र विक्रम का अभिनन्दन करते विकास गोगिया व वेदप्रकाश आर्य।

स्वामी विश्वानन्द जी (मथुरा) व श्री प्राणनाथ जी (आर.एस.एस.) का अभिनन्दन

वैदिक विद्वान स्वामी विश्वानन्द जी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार(इन्दौर),रामकुमार आर्य। द्वितीय चित्र–पूर्वी विभाग के संघचालक श्री प्राणनाथ जी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,यशोवीर आर्य,महेन्द्र भाई।

बादली शाखा के बच्चों का समूहगान व डा. मुकेश सुधीर आर्य का अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् बादली शाखा के बच्चे श्री कमल आर्य के संयोजन में समूहगान प्रस्तुत करते हुए। द्वितीय चित्र–आर्य समाज,शाहबाद मुहम्मदपुर के मंत्री डा.मुकेश सुधीर का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश व आचार्य प्रेमपाल शास्त्री।

समाजसेवी श्री कर्मवीर सूद व श्री ओमप्रकाश आर्य (हापुड़) का अभिनन्दन

समाजसेवी श्री कर्मवीर सूद का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, डा. धर्मपाल आर्य (पूर्व प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यशोवीर आर्य। द्वितीय चित्र–श्री ओमप्रकाश आर्य (हापुड़) का सपत्निक अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश,डा.वीरपाल विद्यालंकार, डा.अनिल आर्य व प्रवीन आर्य (प्रान्तीय महामंत्री उ.प्र.)

अहमदाबाद के मित्रमहेश आर्य व यमुना नगर के स्वामी सच्चिदानन्द जी का अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् गुजरात के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री मित्रमहेश आर्य का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश व आचार्य प्रेमपाल शास्त्री। द्वितीय चित्र–स्वामी सच्चिदानन्द जी का अभिनन्दन करते महेन्द्र भाई व स्वामी आर्यवेश जी।

कवि विजय गुप्त-आर्य नेता प्रेमकुमार सचदेवा व वीरेन्द्र योगाचार्य का अभिनन्दन

आर्य कवि विजय गुप्त का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश,महेन्द्र भाई व दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामंत्री श्री चतरसिंह नागर । द्वितीय चित्र–आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–1,दिल्ली के प्रधान श्री प्रेमकुमार सचदेवा व तृतीय चित्र हरियाणा के प्रान्तीय महामंत्री वीरेन्द्र योगाचार्य का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश व आचार्य प्रेमपाल शास्त्री।

शिक्षक शिवम मिश्रा सम्मानित व रामकुमार आर्य का अभिनन्दन

परिषद् के कर्मठ शिक्षक श्री शिवम मिश्रा को ''आर्य युवा रत्न'' से सम्मानित करते स्वामी आर्यवेश,पार्षद गीता शर्मा,रामकुमार आर्य,डा.अनिल आर्य,मनोज शर्मा,विकास गोगिया व सौरभ गुप्ता। द्वितीय चित्र–दिल्ली प्रदेश संचालक श्री रामकुमार आर्य–अनिता सिंह का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश व पार्षद महेन्द्र आहूजा।

अपीलः यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. **10205148690** स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–**110007**, आई.एफ.एस.कोड **-SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9868002130** पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

– डा. अनिल आर्य, मो.**09810117464**

शोक समाचार

1. श्री सत्यप्रकाश आर्य (पिता श्री राजीव महेश्वरी) का निधन।
2. श्री लक्ष्मीचन्द गुप्ता (ससुर श्री यशपाल यश, जयपुर) का निधन।
3. श्रीमती संतोष बेदी (माता श्रीमती मधुबेदी, प्रशांत विहार) का निधन।
4. श्रीमती शांता मलिक (माता श्री विजय मलिक, जंगपुरा, विस्तार) का निधन।

युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970